ट्रेडिशनल एनर्जी सोर्स को दें प्राथमिकता

plus रिपोर्टर
plusreporter@patrika.com

जयपुर लगातार फॉसिल फ्यूल (कोयला और पेट्रोल) का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। इन ईंधनों से निकलने वाली कार्बन डाईऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी जहरीले गैस स्वास्थ्य के लिए बेहद घातक हैं।

जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया और राजस्थान यूनिवर्सिटी की ओर से 'एन्वायर्नमेंट इम्पेक्ट ऑन हैल्थ एंड इट्स मैनजमेंट : ईकोफ्रैंड्ली स्ट्रेजीज' विषय पर चल रही तीन दिवसीय संगोष्ठी में मंगलवार को यह विचार सामने आए। संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्य वक्ता मगध यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और सोसाइटी के प्रेसिडेंट प्रो. वी.एन. पाण्डे ने कहा कि हमें कंवेशनल सोर्स से बजाए नॉन कंवेशनल सोर्स यानी सोलर एनर्जी, बायोफ्यूल (एलगी, पाम से बनने वाला फ्यूल), विंड मील एनर्जी की ओर बढ़ने की जरूरत है। दुनियाभर के लोग अब ट्रेडिशनल और नॉन कंवेशनल सोर्सेज से एनर्जी डवलप करने को प्राथमिकता दे रहे हैं।

संगोष्ठी के दौरान वीसी सेक्रेट्रेट हॉल के बाहर एग्जीबिशन भी लगाई गई।

उन्होंने कहा कि चाइना ने भी हाल ही वर्ल्ड का सबसे बड़ा सोलर प्लांट बनाया है। इसके अलावा नॉर्वे, कोलंबिया, वेएनजुला जैसे देश भी ट्रेडिशनल एनर्जी को तरजीह दे रहे है। यदि अभी भी हम इसी तरह कोयला और पेट्रोल जैसे ईंधनों का उपयोग करेंगे, तो एक अनुमान के मुताबिक 240 साल में दुनियाभर से हमारे यह ईंधन भंडार खत्म हो जाएंगे।

'रामगंगा' के रिसर्च में चौंकाने वाले तथ्य

रूहेलखंड यूनिवर्सिटी से आए प्रो. डी.के. गुप्ता ने बताया कि वे बरेली के समीप स्थित 'रामगंगा' नदी का रिसर्च कर रहे हैं। रिसर्च के लिए कालागढ़ और कन्नौज तक के एरिया को चुना गया है। रिसर्च में ऐसे कई चौंकाने वाले तथ्य हैं, जिनमें जैव विविधता और ईको सिस्टम के नुकसान को खतरा मालूम पड़ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि हम नदियों को सुरक्षित करने के लिए मजबूत प्रयास करें। संगोष्ठी में प्रो. निलिमा ने फीताक्रेमी कीड़े और प्रो. अशोक पुरोहित ने जोधपुर और बीकानेर में पाए जाने वाले चमगादड़ पर विचार रखे। संगोष्ठी में यंग साइंटिस्ट ने भी अपने पेपर प्रजेंट किए।